श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

कितना प्यारा है श्रृंगार, कि तेरी लेउ नज़र उतार,
कितना प्यारा है, ओ हो, कितना प्यारा है श्रृंगार,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥
सांवरिया तुझे किसने सजाया है,
तुझे सुन्दर से सुन्दर कजरा पहनाया है,
कितना प्यारा हैं श्रृंगार, कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥

केशर चन्दन तिलक लगाकर, सज धज कर के बैठ्यो है।
लग गए तेरे चार चाँद जो,पहने तूने हार
कितना प्यारा है, ओ हो, कितना प्यारा हैं श्रृंगार,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥

सांवरिया तेरा चेहरा चमकता है तेरा कीर्तन बहुत बड़ा,
दरबार महकता है, कितना प्यारा है,
ओ हो, कितना प्यारा हैं श्रृंगार, कि तेरी लेउ नजर उतार,
कितना प्यारा है ॥

किसी भगत से कह कर कान्हा, काली टीकी लगवा ले।
या फिर तू बोले तो लेउ, लूण राई वार,
कितना प्यारा है, ओ हो, कितना प्यारा हैं श्रृंगार ,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा हैं ॥

सांवरिया तेरे भगतों को तेरी फ़िकर
कहीं लग ना जाये तुझे, दुनिया की बुरी नज़र।
कितना प्यारा है, ओ हो, कितना प्यारा हैं श्रृंगार,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥

पता नहीं तू किस रंग का है, आज तलक ना जान सकी।
बनवारी हमने देखे हैं , तेरे रंग हजार,कितना प्यारा हैं।
ओ हो, कितना प्यारा है श्रृंगार,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥

सांवरिया थोड़ा बच बच के रहना जी,
कभी मान भी लो कान्हा भक्तोऊ का कहना जी।
कितना प्यारा है, ओ हो, कितना प्यारा हैं श्रृंगार,
कि तेरी लेउ नजर उतार, कितना प्यारा है ॥

सांवरिया तेरा रोज करूं श्रृंगार कभी कुटिया में मेरे,
आजाओ एक बार, कितना प्यारा है,

ओ हो, कितना प्यारा है सिंगार, कि तेरी लेउ नजर उतार,

कितना प्यारा है ॥

॥ गीतम् 20 ॥

(अथ विं(म्)शः(फ्) प्रबन्धो वसन्तरागेण रूपकताले गीयते)

विरचितचाटुवचनरचनं(ञ्) चरणे रचितप्रणिपातम् ।

सम्प्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥

मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके ॥ 1॥

घनजघनस्तनभारभरे दरमन्थरचरणविहारम् ।

मुखरितमणिमञ्जीरमुपैहि विधेहि मरालविकारम् ॥ 2॥ मुग्धे

शृणु रमणीयतरं(न्) तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ।

कुसुमशरासनशासनवन्दिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥ 3॥ मुग्धे

अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिकुरम्बम् ।

प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं(म्) प्रतिमुञ्च विलम्बम् ॥ 4॥ मुग्धे

स्फुरितमनङ्गतरङ्गवशादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ।

पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं(ङ्) कुचकुम्भम् ॥ 5॥ मुग्धे

अधिगतमखिलसखीभिरिदं(न्) तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।

चण्डि रणितरशनारवडिण्डिममभिसर सरसमलज्जम् ॥ 6॥ मुग्धे

स्मरशरसुभगनखेन करेण सखीमवलम्ब्य सलीलम् ।
चल वलयक्वणीतैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् ॥ 7॥ मुग्धे

श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामम् ।
हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरामम् ॥ 8॥ मुग्धे